बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए व्यावहारिक समाधान की आवश्यकता

"बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य है लेकिन उससे पहले भोजन और स्वास्थ्य के अधिकार की रक्षा होनी चाहिए और इसके लिए व्यवहारिक समाधान की आवश्यकता है" – ये उद्‌गार थे एक दिवसीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र के मुख्य अतिथि अग्रवाल कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता जी के.

उच्चतर शिक्षा निदेशालय द्वारा संपोषित "भारत में बाल– अधिकारों का संरक्षण" विषय पर अग्रवाल महाविद्यालय के सामाजिक–विज्ञान संकाय द्वारा एक दिवसीय राज्य–स्तर की संगोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसमें आस–पास के लगभग 100 प्रबुद्ध विद्धानों, चिन्तकों, विचारकों, प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने प्रतिभागिता कर इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग दिया.

संगोष्ठी के कार्यक्रम अध्यक्ष महाविद्यालय प्राचार्य डॉ० कृष्णकान्त गुप्ता जी ने देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए बच्चों के अधिकारों की रक्षा को अनिवार्य बताया क्योंकि बच्चे ही देश का कल हैं. बीजवक्ता के रुप में उपस्थित जामिया मिलिया इस्लामिया की प्रोफेसर डॉ० नुजहत परवीन खान ने बच्चों के अधिकारों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए भावात्मक अधिकारों की सुरक्षा पर बल दिया. बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं को अनदेखा करना भी उनके अधिकारों का हनन है. कन्वीनर डॉ० अशोक निराला ने अशिक्षा, बाल श्रम, कुपोषण और शोषण से जुड़े आँकडे प्रस्तुत करते हुए बाल अधिकारों की अवेहलना की चिन्ताजनक तस्वीर प्रस्तुत की. प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्रों में बाल अधिकार से जुडे विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई. डॉ० मीना चन्द्रा, (सी.एम.ओ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल–तकनीकी सत्र की अध्यक्ष), रजनी भल्ला तथा डॉ० अनिसुर रहमान (अतिथि वक्ता) और विभिन्न महाविद्यालयों से आये प्रतिभागियों ने बाल श्रम, लैंगिक असमानता, बाल अपराध इत्यादि संवेदनशील विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये.

संगोष्ठी के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में अधिवक्ता श्री गोपाल शर्मा उपस्थित थे. अपने समापन भाषण में डॉ० अनिसुर रहमान ने संगोष्ठी के अंत में बाल अधिकारों के संरक्षण का उत्तरदायित्व परिवार, समाज और अन्य घटकों के समुहिक प्रयास से संभव बनाने पर जोर दिया. आयोजक सचिव श्रीमती रितु ने सार प्रस्तुत करते हुए बताया कि बच्चों के अधिकारों की रक्षा शिक्षिक समाज की ज़िम्मेदारी है और उनसे जुड़े कानून को सख्ती से क्रियान्वित करने की आवश्यकता है. उद्‌घाटन सत्र का संचालन श्रीमती किरण आनन्द ने तथा तकनीकी सत्रों का संचालन डॉ० गीता गुप्ता तथा डॉ सारिका ने किया.